International Journal of Education and Science Research Review
ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org December- 2017, Volume-4, Issue-6 Email- editor@ijesrr.org

भारतीय समाज में शिक्षा के महत्व का संक्षिप्त मूल्यांकन

Kuldeep Singh
Social Studies Master
Government Model Senior Secondary School Chandigarh

सार–
प्राचीन काल में भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। कहने का तात्पर्य यह है कि उस समय में भारत वर्ष धन–धान्य से परिपूर्ण था। लोग समृद्धशाली थे। घरो में ताला भी नहीं डाला जाता था। इसका कारण नैतिक मूल्यों का समझना तथा उनको जीवन में अपनाना था, परन्तु पिछले 50–60 वर्षों में तो नैतिक मूल्यों का लगातार पतन होता चला जा रहा है। जिस देश में नैतिक मूल्यों के महत्व को नहीं समझा जायेगा, वह देश पतन के गर्त में चला जायेगा। भारत अपनी कला, संस्कृति तथा दर्शन आदि की गौरवशाली परम्पराओं पर सदैव गर्व करता रहा है, परन्तु आज अनास्था तथा पारस्परिक अविश्वास के वातावरण में हमारी प्राचीन परम्परा एवं मूल्य धूमिल से हो गये हैं। आधुनिकता की भ्रामक अवधारणा अस्तित्ववादी जीवन, अनात्मपरक–नास्तिकता, पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण तथा कुतक्र प्रधान चिन्तन आदि के कारण अतीत में अविश्वास एवं 'स्व' में अनास्था आदि कारणों से हमारे पुराने मूल्य प्रदूषित हो गये ह। स्वयं पर अनास्था का परिणाम है–आत्मन अर्थात् अपने आदर्शों एवं मूल्यों, अपनी सांस्कृतिक विरासत, अपनी चिन्तन प्रणाली का परित्याग कर उसके स्थान पर बाहरी या विदेशी चिन्तन प्रणाली को सम्मिलित करना। इसके फलस्वरूप हमारे मूल्य दब से गये हैं। वस्तुतः वे पूर्णतः नष्ट नहों हुए हैं, वरन् विघटित हो गये हैं।

प्रस्तावना–
सामाजिक परिवर्तन के लिये ि"क्षा को एक स"ाक्त औजार या साधन माना गया है तथा यह है भी, ि"क्षा ही एक ऐसा यन्त्र है जो किसी समाज को विकास और प्रगति की ओर ले जाती है। ि"क्षा की प्रक्रिया का मुख्य घटक बालक होता है अर्थात् किसी भी समाज में परिवर्तन के लिये उस समाज के बालकों का ि"क्षित किया जाना अति आव"यक है। क्योंकि बालक ही किसी दे"ा या समाज का भविष्य होते हैं तथा भविष्य की प्रगति या विकास का आधार बनते हैं। लेकिन ऐसे बहुत से उदाहरण तथा घटनायें है जब उच्च ि"क्षित व्यक्तियों ने सामाजिक परिवर्तन में बाधाये पैदा की। आज हम वि"व के परिदृ"य पर नजर डालते है तो ऐसे अनेकों उदाहरण दिखाई पड़ते है जिनमें उच्च ि"क्षित व्यक्तियों के द्वारा समाज को, राष्ट तथा वि"व को तोड़ने का कार्य किया गया है। इस प्रकार हम कह सकतें है कि मात्र ि"क्षा से ही सामाजिक परिवर्तन को गति नहीं दी जा सकती है बल्कि मूल्य आधारित ि"क्षा ही ऐसा कर सकती है। आज वि"व एक गाव के रूप में विकसित हो रहा है तथा एक दे"ा का विकास दूसरे दे"ा पर काफी निर्भर करता है लेकिन बहुत से उच्च ि"क्षित व्यक्ति उग्र राष्ट्रवाद की भावना के कारण या अपने निहित स्वार्थो के कारण सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करते देखे जा सकते है।

निर्विवाद रूप से ि"क्षा सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण साधन है यहां ि"क्षा से तात्पर्य केवल पढ लिखकर एक नौकरी प्राप्त करने योग्य हो जाना नहीं है बल्कि ि"क्षा से तात्पर्य है मानव निमार्ण से, सच्चे अर्थो में वही ि"क्षा, ि"क्षा है जो सुयोग्य मानव का निमार्ण करे ि"क्षा के इस कार्य में मूल्य ि"क्षा एक मील का पत्थर बन सकती है। इस प्रकार कह सकतें है कि सामाजिक परिवर्तन को गति प्रदान करने में मूल्य ि"क्षा की भूमिका अतिमहत्वपूर्ण हो सकती है क्योकि मूल्य ि"क्षा के बिना ि"क्षा अधूरी है। तथा ि"क्षा के अभाव में सामाजिक परिवर्तन धीमा हो सकता है।

सामाजिक परिवर्तन में मूल्य ि"क्षा के महत्व को समझने से पूर्व मूल्य ि"क्षा को समझना आव"यक है। अधिकां"ा व्यक्ति मूल्य ि"क्षा को केवल नैतिक ि"क्षा या आध्यात्मिक ि"क्षा के रूप में जानतें है जबकि ऐसा सही नहीं है। मूल्य ि"क्षा सार्वभोमिक मूल्यों से प्रेरित होती है तथा यह आद"ावादी ि"क्षा होती है इसके लिये मूल्यों में आस्था रखने वाले ि"क्षकों या प्रोढों की आव"यकता होती है। मूल्य ि"क्षा औपचारिक या अनौपचारिक दोनो ही रूपों में प्रदान की जा सकती है। यह धर्मनिरपेक्षता, सांस्कृतिक और सामाजिक एकता, सह–अस्तित्व, शान्ति, प्रेम, पारस्परिक आदान प्रदान और सहयोग पर बल देती है। मूल्य ि"क्षा के मानव निमार्ण का प्रयास किया जाता है।यह परम्परागत, आधुनिक और भविष्य में आव"यक मूल्यों के न्यायपूर्ण या उचित सम्मिश्रण से प्रदान की जाती है। जिससे मानव को अधिमानव बनाया जा सके।

उसे एक नैतिक आध्यातमिक आ"ाावादी, उत्तरदायी वि"वसनीय, सिद्धान्तवादी नागरिक ही नही, वि"व का नागरिक बनाया जा सकें।

मूल्य ि"ाक्षा सार्वभौमिक मूल्यों से प्रेरित तथा आद"ार्वादी होती हैं। यह मूल्यों में आस्था रखने वाले ि"ाक्षकों या प्रौढों द्वारा औपचारिक या अनौपचारिक रूप से प्रदान की जाती है। इसके द्वारा धर्मनिरपेक्षता, सांस्कृतिक और सामाजिक एकता, सहअस्तित्व, शान्ति, प्रेम, पारस्परिक आदान–प्रदान और सहयोग पर बल दिया जाता है। यह ि"ाक्षा धन कमाने लक्ष्य को लेकर नही दी जाती है अपितु यह मानव निर्माण करने के विचार से प्रदान की जाती है।यह परम्परागत, आधुनिक और भविष्य में आव"यक मूल्यों के न्यायपूर्ण या उचित उसे एक नैतिक, आध्यात्मिक, आ"ाावादी, उत्तरदायी, वि"वसनीय, सिद्धान्तवादी नागरिक ही नही, वि"व नागरिक बना सके। सही विकास करने के लिये भी मूल्य ि"ाक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि मूल्य ि"ाक्षा का सम्बन्ध विद्यार्थियों में उन दृष्टिकोणों, आदतों और वि"ोषताओं का विकसित करना है जो उन्हें समाज में सांजस्यपूर्ण ढ़ग से रहने में सहायता करें। तथा वें समाज, दे"ा तथा वि"व के विकास के लिये अपना योगदान दे सकें।

मूल्यपरक शिक्षा

आज हम जो आचरण कर रहे हैं वह मूल्यहीन है। अतः अन्धकारमय होने की कल्पना की जा सकती है। भविष्य में हमारे समक्ष भयंकर समस्याएँ आ सकती हैं। हमारी आज की पीढ़ी उन समस्याओं की कल्पना नहीं कर सकती हैं। हमें संस्कृति विहीनता अमानवीयता और अलगाव से बचने की आवश्यकता है। आज की पीढ़ी को ऐसी शिक्षा देनी है जो इनको भविष्य के लिए तैयार कर सके। उन्हें ऐसी शिक्षा देनी होगी जो उनमें नैतिक निर्णय की क्षमता का विकास करे और आदर्श मूल्यों को स्वीकार करने तथा तदानुकूल आचरण करने के लिए तैयार कर सके। अतः मूल्यों की रक्षा के लिए मूल्य की शिक्षा आवश्यक है। मूल्यों की शिक्षा पर बल देते हुए 1959 में आजाद स्मृति व्याख्यान देते हुए पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था–"क्या हम विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति के साथ मानसिक व आध्यात्मिक प्रगति को जोड़ सकते हैं? हम विज्ञान को छोड़ नहीं सकते क्योंकि वह आज के संसार को तथ्यात्मक ज्ञान देता है परन्तु हम मौलिक सिद्धान्तों को भी भूल नहीं सकते। जिसके कारण अनन्त काल से भारत की विशेषता व मजबूरी रही है। औद्योगिक प्रगति की ओर हम पूरी ताकत व निष्ठा के साथ आगे बढ़े पर साथ ही स्मरण रहे कि भौतिक उपलब्धियाँ, बिना करूणा, सहनशीलता एवं विवेक के राख में मिल जायेगी।"

हमारे देश के सभी क्षेत्रों में उन्नति करने में जिनका हाथ है वे सभी मूल्य इस समय संकट की स्थिति में है। हम अपने महत्वपूर्ण मूल्यों को जानते हैं लेकिन उनको ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं है। बहुत से मूल्यों के पालन का हम केवल नाटक करते हैं लेकिन उन्हें स्वीकार नहीं करते। मूल्यों के क्षेत्र में चारों ओर उहापोह की स्थिति है। उसका परिणाम हुआ कि ऊपर से प्रसन्न दिखने वाला आदमी भीतर से टूट चुका है। फलतः वह अब अपने महत्वपूर्ण मूल्यों की आवश्यकता को समझने के लिए बाध्य है क्योंकि उसे आने वाले नये युग का सामना करना है। चारो ओर भ्रष्ट आचरण हो रहे हैं। लोग मूल्यों से हट रहे हैं। सामाजिक क्षेत्र से मूल्य गायब हो गये हैं। इस प्रकार आने वाले समय का सामना करने में मनुष्य असक्षम हो गया है। अतएव समाज की आवश्यकता है कि हम मूल्यों की शिक्षा दे। वर्तमान पीढ़ी को कल के लिए तैयार करने हेतु मूल्यों की शिक्षा का स्वीकार करके इसे अनिवार्य बनाना होगा। इस प्रकार आवश्यकता को ध्यान में रखकर मूल्य शिक्षा दी जानी चाहिए।

मूल्यपरक शिक्षा व्यक्ति को सामाजिक परिवर्तन के विविध रूपों को एवं उनके निहीतार्थों को समझने में सक्षम बना रही है तथा उनकी नैतिक निर्णय क्षमता व मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को विकसित कर रही है। हमें शिक्षा को इस प्रकार मूल्यपरक बनाना चाहिए कि विद्यार्थी भविष्य के लिए सुरक्षित तैयारी कर सके।

निष्कर्ष–

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आज हमारा समाज मूल्य–संकट के दौर से गुजर रहा है। इस संकट को दूर करने के लिए मूल्यपरक शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है। बालकों में मूल्यों का विकास आज समय की सबसे बड़ी चुनौती व

आवश्यकता है। परिवार, विद्यालय, समुदाय, सामाजिक संगठनों व सरकार आदि सभी को नियोजित व समन्वित प्रयासों के द्वारा मूल्यों का विकास करना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. कबीर, हिमायू (1964) भारत का शिक्षा दर्शन, एशिया पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली
2. ओड, एलके (1982) शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान घण्टा एकेडमी, जयपुर
3. अल्तेकर एएस (1957) भारत में शिक्षा, बबल किशोर एण्ड ब्रदर्श, वाराणसी
4. भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएं, पांडेय रामशकल, पेज 233, 1997
5. हमारा संविधान, सुभाष काश्यप, पेज 102, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया 1992